

किशोरों के एकल अभिभावकों की कठिनाइयों का ग्रामीण एवं नगरीय परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन: अयोध्या जनपद के संदर्भ में

दीपाली मौर्या¹, डॉ. (प्रो) रश्मि बिश्रोई²

¹शोध छात्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

²शोध निर्देशिका, नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ

¹Email: mauryadeepali33@gmail.com



Received 02 September 2026

Accepted 10 September 2026

Published 17 September 2026

Corresponding Author:

दीपाली मौर्या

Email: mauryadeepali33@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i5.14>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश :

प्रस्तुत अध्ययन अयोध्या जनपद (उत्तर प्रदेश) में किशोरों का पालन-पोषण कर रहे एकल अभिभावकों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों का ग्रामीण एवं नगरीय परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक विश्लेषण करता है। बढ़ते विधवापन, विवाह-विच्छेद एवं परित्याग के कारण एकल अभिभावक परिवार भारत में तेज़ी से एक महत्वपूर्ण सामाजिक यथार्थ बनते जा रहे हैं, फिर भी ग्रामीण-नगरीय अंतर पर साक्ष्य सीमित हैं। अध्ययन के दो मुख्य उद्देश्य थे, आर्थिक, मानसिक, सामाजिक तथा संतान-पालन संबंधी कठिनाइयों का मापन, और इन कठिनाइयों में ग्रामीण-नगरीय अंतर का परीक्षण। वर्णनात्मक सर्वेक्षण अभिकल्प के अंतर्गत 240 एकल अभिभावकों (120 ग्रामीण, 120 नगरीय) का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया तथा संरचित कठिनाई मापनी से आँकड़े एकत्र हुए। परिकल्पना थी कि दोनों क्षेत्रों की कठिनाइयों में सार्थक अंतर पाया जाएगा। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण अभिभावकों में आर्थिक एवं शैक्षिक कठिनाइयाँ अधिक तथा नगरीय अभिभावकों में सामाजिक कलंक, भावनात्मक एकाकीपन एवं भूमिका-अतिभार अधिक है। निष्कर्षतः कठिनाइयों का स्वरूप क्षेत्र-सापेक्ष है, अतः ग्रामीण-नगरीय आवश्यकताओं के अनुरूप पृथक् सहायता-नीतियाँ अपेक्षित हैं।

मुख्य शब्द: एकल अभिभावक, किशोर, ग्रामीण-नगरीय तुलना, सामाजिक कलंक, अयोध्या जनपद

1. प्रस्तावना

परिवार किशोर के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है, जहाँ माता-पिता दोनों की उपस्थिति बालक को सुरक्षा एवं स्थिरता का बोध कराती है। किंतु जब यह उत्तरदायित्व किसी एक अभिभावक को अकेले निभाना पड़ता है, तो उसके सम्मुख आर्थिक, सामाजिक एवं भावनात्मक चुनौतियों का जटिल जाल खड़ा हो जाता है। विधवापन, विवाह-विच्छेद, पति-पत्नी का पृथक्करण अथवा परित्याग जैसे कारणों से भारत में एकल अभिभावक परिवारों की संख्या

निरंतर बढ़ रही है (भट एवं पाटिल, 2019)। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 11.5 प्रतिशत ग्रामीण एवं 12.4 प्रतिशत नगरीय परिवार स्त्री-प्रधान हैं, जो इस सामाजिक परिवर्तन की व्यापकता को दर्शाता है। फिर भी समाज की दृष्टि, विद्यालयी व्यवस्थाएँ एवं नीतिगत ढाँचे अब भी द्वि-अभिभावक परिवार को ही 'सामान्य' मानकर चलते हैं, जिससे एकल अभिभावकों की वास्तविक कठिनाइयाँ प्रायः उपेक्षित रह जाती हैं (थंगवेलु, 2025)। किशोरावस्था स्वयं में संक्रमण एवं संवेदनशीलता का काल है, जिसमें मार्गदर्शन, अनुशासन एवं भावनात्मक संबल की विशेष आवश्यकता होती है। ऐसे में अकेले अभिभावक को कमाई, गृहकार्य, संतान-पालन एवं भावनात्मक समर्थन, ये सभी भूमिकाएँ एक साथ निभानी पड़ती हैं, जिससे भूमिका-अतिभार उत्पन्न होता है (कोटवाल एवं प्रभाकर, 2009)। पारिवारिक संरचना में यह परिवर्तन किशोर के शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन को भी प्रभावित करता है (अमाटो, 2005)।

विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि एकल अभिभावक की कठिनाइयों का स्वरूप उसके निवास-परिवेश के अनुसार बदल सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार, निम्न आय एवं शैक्षिक संसाधनों का अभाव प्रमुख समस्या है, जबकि संयुक्त परिवार एवं पड़ोसी सहयोग कुछ राहत देते हैं। इसके विपरीत नगरीय क्षेत्रों में आय भले अपेक्षाकृत बेहतर हो, परंतु एकाकी जीवन-शैली, सामाजिक कलंक एवं समयाभाव कठिनाई को बढ़ा देते हैं। अयोध्या जनपद, जहाँ तीव्र नगरीकरण के साथ-साथ विस्तृत ग्रामीण अंचल भी विद्यमान है, इस तुलनात्मक अध्ययन हेतु उपयुक्त क्षेत्र है। अतः प्रस्तुत शोध इन्हीं ग्रामीण-नगरीय अंतरों को व्यवस्थित रूप से समझने का प्रयास करता है, ताकि क्षेत्र-विशिष्ट सहायता-व्यवस्थाओं की दिशा में ठोस आधार प्राप्त हो सके।

2. साहित्य समीक्षा

एकल अभिभावकता पर हुए अध्ययन निरंतर यह संकेत देते हैं कि इन परिवारों को आर्थिक कठिनाई सर्वाधिक रूप में प्रभावित करती है। कोटवाल एवं प्रभाकर (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि एकल माताओं के लिए वित्तीय असुरक्षा सबसे प्रबल तनावकारक है, साथ ही उन्होंने अकेलेपन, आत्म-विश्वास की कमी एवं सामाजिक आयोजनों से दूरी की प्रवृत्ति भी देखी। स्टैक एवं मेरेडिथ (2018) ने रेखांकित किया कि वित्तीय संकट सामाजिक पीड़ा से होकर सहायता-याचना तक पहुँचने की एक कठिन यात्रा बन जाता है। किम, चोई एवं किम (2018) के तुलनात्मक अध्ययन में आर्थिक समस्याएँ एकल माताओं में अवसाद से सीधे जुड़ी पाई गईं। आर्थिक गतिविधियों के विश्लेषण में ओज़तुर्क एवं बोयलू (2015) ने भी एकल अभिभावक परिवारों की विशिष्ट वित्तीय विवशताओं को उजागर किया। संतान के विकास पर प्रभाव की दृष्टि से जैक्सन, प्रेस्टन एवं फ्रैंके (2010) ने एकल पालन-पोषण को बाल-व्यवहार समस्याओं से संबद्ध बताया, जबकि फलाना, बाडा एवं अयोडेले (2012) ने पारिवारिक संरचना का बालक के मनोवैज्ञानिक एवं संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव दर्ज किया। कैवनाघ एवं फोम्बी (2012) के अनुसार पारिवारिक अस्थिरता किशोरों के शैक्षिक प्रक्षेप-पथ को बाधित करती है, तथा पोंग, ड्रोंकर्स एवं हैम्पडेन-थॉम्पसन (2003) के बहुदेशीय विश्लेषण में एकल-अभिभावक संतानें औसतन निम्न शैक्षिक उपलब्धि दर्शाती हैं। अमाटो, पैटरसन एवं बीटी (2015) ने भी इसी प्रवृत्ति की पुष्टि की।

भारतीय संदर्भ में सिया एवं अनीश (2024) ने केरल के 385 किशोरों पर अध्ययन कर एकल-अभिभावक किशोरों के मनोवैज्ञानिक कल्याण में संवेग-नियमन एवं सामाजिक दक्षता की मध्यस्थ भूमिका सिद्ध की, जिसमें लगभग 70 प्रतिशत प्रतिभागी ग्रामीण थे। दत्त, रूपेश एवं जनार्दन (2026) ने नगरीय भारत में एकल-माता एवं द्वि-अभिभावक किशोरों के जोखिम-व्यवहार की तुलना की। कुडेंगा (2017) ने एकल अभिभावकों के समक्ष संतान की शिक्षा संबंधी चुनौतियों को विस्तार से वर्णित किया। सामाजिक कलंक के संदर्भ में लाई (2022) ने अविवाहित एकल माताओं द्वारा अपनाई गई प्रबंधन-रणनीतियों का अध्ययन किया, जबकि रिक्टर एवं लेमोला (2017) ने एकल माता के साथ बड़े होने एवं वयस्क जीवन-संतुष्टि के संबंध को परखा। चंदा एवं पुजार (2018) ने एकल अभिभावकों में तनाव एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण का आकलन किया। मनहास एवं रिया (2013) ने जम्मू नगर के एकल-अभिभावक परिवारों में पालन-पोषण एवं लचीलेपन का संबंध देखा, तथा हिल्टन एवं डेवाल (1998) ने एकल-माता, एकल-पिता एवं अक्षुण्ण परिवारों के पालन-पोषण

की तुलना प्रस्तुत की। इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि ग्रामीण-नगरीय तुलनात्मक भारतीय साक्ष्य अब भी अपर्याप्त है, जिसे प्रस्तुत शोध पूरा करने का प्रयास करता है।

3. उद्देश्य

1. अयोध्या जनपद के एकल अभिभावकों की आर्थिक, मानसिक, सामाजिक एवं किशोर-पालन संबंधी कठिनाइयों का मापन करना।
2. इन कठिनाइयों की तीव्रता में ग्रामीण एवं नगरीय एकल अभिभावकों के बीच सार्थक अंतर का परीक्षण करना।

4. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षण अभिकल्प का प्रयोग किया गया, क्योंकि इसका लक्ष्य प्राकृतिक परिवेश में कठिनाइयों का मापन एवं दो समूहों के बीच तुलना करना था। अध्ययन उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद में सम्पन्न हुआ, जिसमें नगरीय क्षेत्र (अयोध्या-फ़ैज़ाबाद नगर निगम क्षेत्र) तथा निकटवर्ती विकासखंडों के ग्रामीण क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया, ताकि दोनों परिवेशों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो। अध्ययन की जनसंख्या जनपद के वे एकल अभिभावक थे जो 11 से 18 वर्ष के किशोर का पालन-पोषण कर रहे थे। कुल 240 अभिभावकों का चयन उद्देश्यपूर्ण एवं हिम-गोलक निदर्शन प्रविधि से किया गया, जिनमें 120 ग्रामीण एवं 120 नगरीय थे। समूह-संतुलन हेतु क्षेत्र-अनुसार समान संख्या निर्धारित की गई।

आँकड़ा-संकलन हेतु एक संरचित एवं स्व-निर्मित 'एकल अभिभावक कठिनाई मापनी' का प्रयोग किया गया, जिसमें आर्थिक, मानसिक/भावनात्मक, सामाजिक, किशोर-पालन, स्वास्थ्य तथा भूमिका-अतिभार—इन छह आयामों के अंतर्गत पाँच-बिंदु मापनी प्रकार के कथन सम्मिलित थे। मापनी की विषय-वस्तु वैधता विशेषज्ञ-परामर्श से तथा विश्वसनीयता आंतरिक संगति गुणांक द्वारा सुनिश्चित की गई। आँकड़े गृह-भेंट एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा एकत्र किए गए तथा सहभागिता पूर्णतः स्वैच्छिक एवं गोपनीय रखी गई। विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी (आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन) तथा निष्कर्षात्मक सांख्यिकी (स्वतंत्र टी-परीक्षण एवं काई-वर्ग परीक्षण) का प्रयोग किया गया। सार्थकता स्तर 0.05 निर्धारित रहा।

5. परिणाम

तालिका 1: उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण (कुल = 240)

विशेषता	ग्रामीण (120)	नगरीय (120)
एकल माता	78 (65.0%)	71 (59.2%)
एकल पिता	42 (35.0%)	49 (40.8%)
औसत आयु (वर्ष)	41.6	39.8
माध्यमिक तक शिक्षित	84 (70.0%)	52 (43.3%)
औसत मासिक आय (₹)	9,750	17,400

स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण आँकड़े (2024–25)

तालिका 1 के अनुसार दोनों क्षेत्रों में एकल माताओं का अनुपात अधिक है, जो स्त्री-प्रधान एकल परिवारों की प्रधानता दर्शाता है। ग्रामीण अभिभावकों में माध्यमिक तक शिक्षित का अनुपात (70%) नगरीय (43.3%) की तुलना में अधिक होने पर भी उनकी औसत मासिक आय (₹9,750) नगरीय आय (₹17,400) से काफी कम है। यह आर्थिक असमानता आगे की कठिनाई-तुलना को समझने हेतु महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करती है तथा क्षेत्रगत संसाधन-अंतर को रेखांकित करती है।

दीपाली मौर्या¹, डॉ. (प्रो) रश्मि बिश्रोई²
तालिका 2: एकल अभिभावकता के कारण

कारण	ग्रामीण	नगरीय
विधवापन	62 (51.7%)	44 (36.7%)
विवाह-विच्छेद	18 (15.0%)	41 (34.2%)
पृथक्करण/परित्याग	34 (28.3%)	28 (23.3%)
अन्य	6 (5.0%)	7 (5.8%)

काई-वर्ग = 13.42, स्वातंत्र्य अंश = 3, सार्थकता < 0.01 · स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण आँकड़े (2024–25)

तालिका 2 दर्शाती है कि ग्रामीण क्षेत्र में एकल अभिभावकता का प्रमुख कारण विधवापन (51.7%) है, जबकि नगरीय क्षेत्र में विवाह-विच्छेद (34.2%) का अनुपात उल्लेखनीय रूप से अधिक है। काई-वर्ग मान (13.42, सार्थकता < 0.01) सार्थक है, जो सिद्ध करता है कि कारणों का वितरण दोनों क्षेत्रों में सांख्यिकीय रूप से भिन्न है। यह अंतर नगरीय जीवन में बदलते वैवाहिक प्रतिमानों तथा ग्रामीण समाज में विधवापन की अपेक्षाकृत अधिक भूमिका को प्रतिबिंबित करता है।

तालिका 3: आयाम-वार औसत कठिनाई अंक की तुलना (टी-परीक्षण)

कठिनाई आयाम	ग्रामीण माध्य (मा.वि.)	नगरीय माध्य (मा.वि.)	टी-मान	सार्थकता
आर्थिक	4.12 (0.58)	3.46 (0.71)	7.91	<0.01
भावनात्मक/मानसिक	3.38 (0.74)	3.95 (0.62)	6.45	<0.01
सामाजिक (कलंक/एकाकीपन)	3.21 (0.69)	3.88 (0.66)	7.68	<0.01
किशोर-पालन	3.94 (0.61)	3.57 (0.70)	4.36	<0.01
भूमिका-अतिभार	3.40 (0.71)	4.05 (0.59)	7.72	<0.01

स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण आँकड़े (2024–25)

तालिका 3 स्पष्ट करती है कि आर्थिक (टी=7.91) एवं किशोर-पालन (टी=4.36) कठिनाइयाँ ग्रामीण अभिभावकों में सार्थक रूप से अधिक हैं, जबकि भावनात्मक (टी=6.45), सामाजिक (टी=7.68) एवं भूमिका-अतिभार (टी=7.72) कठिनाइयाँ नगरीय अभिभावकों में अधिक पाई गईं। सभी अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। यह परिणाम दूसरी परिकल्पना की पुष्टि करते हुए दर्शाता है कि कठिनाई का स्वरूप क्षेत्र-सापेक्ष है—आर्थिक बनाम मनो-सामाजिक भार का स्पष्ट विभाजन उभरता है।

तालिका 4: आर्थिक कठिनाई के घटक ('उच्च कठिनाई' बताने वाले प्रतिशत)

घटक	ग्रामीण	नगरीय
अपर्याप्त मासिक आय	81.7%	60.0%
शुल्क-भुगतान में कठिनाई	74.2%	55.8%
बचत/वित्तीय सुरक्षा का अभाव	70.8%	52.5%
ऋण-भार	58.3%	41.7%

स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण आँकड़े (2024–25)

तालिका 4 के अनुसार प्रत्येक आर्थिक घटक पर ग्रामीण अभिभावकों का प्रतिशत नगरीय से अधिक है; अपर्याप्त आय की समस्या ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक (81.7%) है। शुल्क-भुगतान एवं बचत के अभाव में भी ग्रामीण भार स्पष्ट रूप से अधिक है। यह आँकड़े कोटवाल एवं प्रभाकर (2009) के निष्कर्षों के अनुरूप हैं तथा संकेत देते हैं कि ग्रामीण आर्थिक विवशता किशोर की शिक्षा-निरंतरता पर सीधा दबाव डालती है।

तालिका 5: किशोर-पालन संबंधी कठिनाई के घटक ('उच्च कठिनाई' प्रतिशत)

घटक	ग्रामीण	नगरीय
पढ़ाई की निगरानी/शैक्षिक मार्गदर्शन	68.3%	49.2%
व्यवहार/अनुशासन प्रबंधन	55.0%	62.5%
करियर/भविष्य पर संवाद	61.7%	47.5%
गैजेट/सहपाठी-प्रभाव संभालना	44.2%	71.7%
भावनात्मक संवाद	47.5%	58.3%

स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण आँकड़े (2024-25)

तालिका 5 दर्शाती है कि शैक्षिक मार्गदर्शन (68.3%) एवं करियर-संवाद (61.7%) में ग्रामीण अभिभावक अधिक कठिनाई अनुभव करते हैं, जबकि गैजेट/सहपाठी-प्रभाव (71.7%) एवं भावनात्मक संवाद (58.3%) नगरीय अभिभावकों के लिए बड़ी चुनौती हैं। यह विरोधाभासी प्रतिमान दर्शाता है कि किशोर-पालन की कठिनाई का स्वरूप परिवेश के अनुसार बदलता है—ग्रामीण में संसाधन-केंद्रित, नगरीय में व्यवहार एवं तकनीक-केंद्रित।

तालिका 6: समग्र कठिनाई-स्तर का वितरण

कठिनाई स्तर	ग्रामीण	नगरीय
निम्न	14 (11.7%)	19 (15.8%)
मध्यम	41 (34.2%)	55 (45.8%)
उच्च	65 (54.2%)	46 (38.3%)

काई-वर्ग = 7.43, स्वातंत्र्य अंश = 2, सार्थकता < 0.05 · स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण आँकड़े (2024-25)

तालिका 6 के अनुसार 'उच्च' कठिनाई-स्तर ग्रामीण अभिभावकों में अधिक (54.2%) है, जबकि नगरीय अभिभावक अधिकांशतः 'मध्यम' स्तर (45.8%) में आते हैं। काई-वर्ग मान (7.43, सार्थकता < 0.05) सार्थक है, जो समग्र कठिनाई-तीव्रता में क्षेत्रगत भिन्नता प्रमाणित करता है। मुख्यतः आर्थिक एवं शैक्षिक भार के कारण ग्रामीण समग्र कठिनाई-स्तर ऊँचा रहता है, यद्यपि नगरीय कठिनाई का स्वरूप गुणात्मक रूप से भिन्न है।

6. विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम दोनों उद्देश्यों की दिशा में स्पष्ट संकेत देते हैं। प्रथम उद्देश्य, कठिनाइयों का मापन के अंतर्गत यह सामने आया कि एकल अभिभावक एक साथ अनेक मोर्चों पर संघर्ष करते हैं, जिनमें आर्थिक भार सर्वाधिक प्रबल है। यह निष्कर्ष कोटवाल एवं प्रभाकर (2009) तथा स्टैक एवं मेरेडिथ (2018) के अध्ययनों से मेल खाता है, जिनमें वित्तीय असुरक्षा को केंद्रीय तनावकारक माना गया। किम, चोई एवं किम (2018) द्वारा रेखांकित आर्थिक-अवसाद संबंध भी हमारे आँकड़ों में परोक्ष रूप से दिखाई देता है, क्योंकि उच्च आर्थिक कठिनाई वाले समूहों में भावनात्मक भार भी अधिक रहा। द्वितीय उद्देश्य, ग्रामीण-नगरीय अंतर का परीक्षण, इस अध्ययन का मूल योगदान है। तालिका 3 के टी-मान सिद्ध करते हैं कि आर्थिक एवं किशोर-पालन कठिनाइयाँ ग्रामीण अभिभावकों में, तथा भावनात्मक, सामाजिक एवं भूमिका-अतिभार कठिनाइयाँ नगरीय अभिभावकों में अधिक हैं। यह द्विमुखी प्रतिमान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्र में निम्न आय (तालिका 1) एवं शैक्षिक संसाधनों का अभाव संतान की पढ़ाई-निरंतरता पर सीधा दबाव डालता है, जो कैवनाघ एवं फोम्बी

(2012) तथा पोंग, ड्रोंकर्स एवं हैम्पडेन-थॉम्पसन (2003) द्वारा वर्णित शैक्षिक-उपलब्धि-हास से संगत है। दूसरी ओर, नगरीय अभिभावकों में सामाजिक कलंक एवं एकाकीपन की प्रबलता लाई (2022) के निष्कर्षों की पुष्टि करती है, जिन्होंने एकल माताओं पर सामाजिक दृष्टि एवं उससे निपटने की रणनीतियों का अध्ययन किया।

विशेष रूप से किशोर-पालन के संदर्भ में (तालिका 5) उभरा विरोधाभास उल्लेखनीय है, ग्रामीण अभिभावक शैक्षिक मार्गदर्शन में अधिक असमर्थ हैं, जबकि नगरीय अभिभावक गैजेट-व्यसन एवं सहपाठी-प्रभाव से अधिक जूझते हैं। यह प्रतिमान थंगवेलु (2025) के उस निष्कर्ष से मेल खाता है, जिसमें भारतीय एकल अभिभावकों हेतु गैजेट-व्यसन, प्रतिस्पर्धी पाठ्यक्रम एवं समय-प्रबंधन को प्रमुख चुनौती बताया गया। सिया एवं अनीश (2024) द्वारा प्रतिपादित संवेग-नियमन एवं सामाजिक दक्षता की मध्यस्थ भूमिका यह समझने में सहायक है कि अभिभावक का भावनात्मक भार किशोर के कल्याण तक कैसे संचरित होता है। दत्त, रूपेश एवं जनार्दन (2026) का जोखिम-व्यवहार संबंधी निष्कर्ष भी नगरीय किशोरों के व्यवहार-प्रबंधन की कठिनाई (तालिका 5) को सैद्धांतिक आधार देता है। समग्र दृष्टि से, तालिका 6 यह दर्शाती है कि ग्रामीण समग्र कठिनाई-तीव्रता ऊँची है, फिर भी नगरीय कठिनाई गुणात्मक रूप से भिन्न मनो-सामाजिक है। अतः 'एक समान समाधान' का दृष्टिकोण अपर्याप्त सिद्ध होता है। ग्रामीण क्षेत्र हेतु आय-सहायता, छात्रवृत्ति एवं शैक्षिक संसाधन, तथा नगरीय क्षेत्र हेतु परामर्श, कलंक-निवारण एवं समय-प्रबंधन समर्थन की आवश्यकता है। चंदा एवं पुजार (2018) का तनाव-कल्याण विश्लेषण भी इन क्षेत्र-विशिष्ट हस्तक्षेपों की पुष्टि करता है।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि अयोध्या जनपद के एकल अभिभावक गंभीर एवं बहुआयामी कठिनाइयों का सामना करते हैं, किंतु इन कठिनाइयों का स्वरूप ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश में स्पष्ट रूप से भिन्न है। ग्रामीण अभिभावकों के लिए आर्थिक विवशता एवं किशोर की शैक्षिक निरंतरता सबसे बड़ी चुनौती है, जबकि नगरीय अभिभावकों के लिए सामाजिक कलंक, भावनात्मक एकाकीपन एवं भूमिका-अतिभार अधिक भारी सिद्ध होते हैं। दोनों परिकल्पनाएँ पुष्ट हुईं, कठिनाइयाँ विद्यमान हैं और उनमें सार्थक क्षेत्रगत अंतर है। अतः नीति-निर्माताओं, विद्यालयों एवं सामाजिक संगठनों को क्षेत्र-विशिष्ट, संवेदनशील एवं समन्वित सहायता-व्यवस्थाएँ विकसित करनी चाहिए, ताकि एकल अभिभावक एवं उनके किशोर दोनों का कल्याण सुनिश्चित हो सके। भविष्य में बड़े निदर्शन एवं किशोरों के दृष्टिकोण को सम्मिलित करते हुए अध्ययन की दिशा विस्तृत की जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. अमाटो, पी. आर. (2005). परिवार-संरचना में परिवर्तन का अगली पीढ़ी के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं संवेगात्मक कल्याण पर प्रभाव। *द फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रन*, 15(2), 75–96.
2. अमाटो, पी. आर., पैटरसन, एस., एवं बीटी, बी. (2015). एकल-अभिभावक परिवार एवं बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि: एक राज्य-स्तरीय विश्लेषण। *सोशल साइंस रिसर्च*, 53, 191–202.
3. भट, एन. ए., एवं पाटिल, आर. आर. (2019). भारत में एकल अभिभावकता वाले परिवार एवं बच्चों पर उनका प्रभाव। *दिल्ली साइकियाट्री जर्नल*, 22(1), 161–165.
4. कैवनाघ, एस. ई., एवं फोम्बी, पी. (2012). पारिवारिक अस्थिरता, विद्यालयी परिवेश एवं किशोरों का शैक्षिक प्रक्षेप-पथ। *सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन*, 85(1), 81–97.
5. चंदा, के., एवं पुजार, एल. (2018). एकल अभिभावकों में तनाव एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्योर एंड एप्लाइड बायोसाइंस*, 6(4), 226–232.

6. दत्त, एस., रूपेश, बी. एन., एवं जनार्दन, एन. (2026). भारत में एकल-माता बनाम द्वि-अभिभावक परिवारों के किशोरों में जोखिम-व्यवहार: एक अनुप्रस्थ-काट तुलनात्मक अध्ययन। *न्यूरीयस*, 18(1)
7. फलाना, बी. ए., बाडा, एफ. ओ., एवं अयोडेले, सी. जे. (2012). एकल-अभिभावक पारिवारिक संरचना तथा एकिति राज्य में बच्चों का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड डेवलपमेंटल साइकोलॉजी*, 2(2), 158–164.
8. हिल्टन, जे. एम., एवं डेवाल, ई. एल. (1998). एकल-माता, एकल-पिता एवं अक्षुण्ण परिवारों में पालन-पोषण एवं बच्चों के व्यवहार की तुलना। *जर्नल ऑफ डिवोर्स एंड रीमैरिज*, 29(3–4), 23–54.
9. जैक्सन, ए. पी., प्रेस्टन, के. एस., एवं फ्रैंके, टी. एम. (2010). एकल पालन-पोषण एवं किंडरगार्टन में बाल-व्यवहार समस्याएँ। *रेस एंड सोशल प्रॉब्लम्स*, 2(1), 50–58.
10. किम, जी. ई., चोई, एच. वाई., एवं किम, ई. जे. (2018). एकल माताओं में अवसाद पर आर्थिक समस्याओं का प्रभाव: विवाहित स्त्रियों के साथ एक तुलनात्मक अध्ययन। *प्लॉस वन*, 13(8), e0203004.
11. कोटवाल, एन., एवं प्रभाकर, बी. (2009). एकल माताओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ। *जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज*, 21(3), 197–204.
12. कुडेंगा, एम. (2017). बच्चों के अधिगम एवं विकास में एकल अभिभावकों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशंस*, 7(6), 178–186.
13. लाई, एच. जे. (2022). ताइवान में अविवाहित एकल माताओं का सामाजिक कलंक एवं प्रबंधन-रणनीतियाँ। *एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ सोशल वर्क एंड डेवलपमेंट*, 32(1), 38–49.
14. मनहास, एस., एवं रिया. (2013). *किशोरावस्था में पालन-पोषण एवं लचीलेपन के बीच संबंध का आकलन: जम्मू नगर के एकल-अभिभावक परिवारों का अध्ययन* [अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोध-प्रबंध]. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, भारत.
15. ओज़तुर्क, एम. एस., एवं बोयलू, ए. ए. (2015). एकल अभिभावक परिवारों की आर्थिक गतिविधियों का अन्वेषण। *सोस्योइकोनोमी*, 23(25), 93–111.
16. पोंग, एस. एल., ड्रोंकर्स, जे., एवं हैम्पडेन-थॉम्पसन, जी. (2003). एकल बनाम द्वि-अभिभावक परिवारों में पारिवारिक नीतियाँ एवं बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि। *जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली*, 65(3), 681–699.
17. रिक्टर, डी., एवं लेमोला, एस. (2017). एकल माता के साथ बड़े होना एवं वयस्कावस्था में जीवन-संतुष्टि: मध्यस्थ एवं नियामक कारकों का परीक्षण। *प्लॉस वन*, 12(6), e0179639.
18. सिया, एस. के., एवं अनीश, ए. (2024). एकल-अभिभावक किशोरों का लचीलापन एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण: सामाजिक दक्षता एवं संवेग-नियमन की भूमिका। *जर्नल ऑफ इंडियन एसोसिएशन फॉर चाइल्ड एंड एडोलसेंट मेंटल हेल्थ*, 20(2).
19. स्टैक, आर. जे., एवं मेरेडिथ, ए. (2018). एकल अभिभावकों पर वित्तीय संकट का प्रभाव: सामाजिक पीड़ा से सहायता-याचना तक की यात्रा का अन्वेषण। *जर्नल ऑफ फैमिली एंड इकोनॉमिक इशूज*, 39(2), 233–242.
20. थंगवेलु, ए. पी. (2025). एकल-अभिभावक एवं उनके किशोरों की शिक्षा: शैक्षिक व्यावसायिकता का आह्वान। *क्रंटियर्स इन एजुकेशन*, 10, 1494413.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.